



२५७ ३१२ ५५

ASHA ARCHIVES

सुख प्रसाद

1633

ASHA ARCHIVES



१ ग्री ग न स प न ज ॥ १ ॥ ग्री व रु स ग न प ॥ ॥ वा स उ वा
च ॥ १ ॥ स्या मि च ना च न गु नं गु नं स र्व य का न क ॥
य स्य स की र्ण ना द व रु धा दि स्तु पु डा य न ॥ व रु स्य ति १ सु
रा वा र्था ना ति स्त नि ति का न क ॥ गु न स्त वा थ वा गी ल्म व
द व ला वि दा व न ॥ शो म्म म्म र्ति १ सु धा द र्ति १ या वा सा ॥ ॥

या ग म रु ॥ अ ग व द्वा दि र्च द र्ति र्मा ग १ कू कू म च्चु वि १ ॥ ॥
स र्व र्त्त १ स र्व क ल च स र्व व न म स्तु ता ॥ स य धा मा क्मा
ला च १ गु र्वा यो ज नि वा न क ॥ न च वि डा ति ना मा नि गु न स्त
स्वा रु प १ य ० ॥ अ ग्ना त्रा ग्म म ध र्म ध न धा न स्त ना वि ता ॥
जी व त्त्व र्त्त डा तं सा ग्म म य न्त्वा वि व र्त्ति ता ॥ क र्म धा म न सा

वावा, यस्यापसह्यार्कप्रत् ॥ तदस्य ० नादस्य दह्यनिवि
वधन ॥ गुनदिनमूजयप्रभु, वातवसदलवने ॥ धूयदीपा
पहात्रेभ, विपुलाजयवर्क ॥ वीज ॥ नववहस्यस्यपमाह
वहस्यति ॥ ॥ ॐ तिभहविद्यासकृतांतु नस्मात्सर्व ॥
॥ शुमिप्रदाहस्य ६५१ माक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रशागभसायनम ॥ ॥ ॐ नम ॥ सनिच नार्थनम
: प्रणं म्यदेवदेवेशं, सबग्रहनिवारणं ॥ शनैश्चरशान्न
र्थ, विन्नया मासपारिव ॥ १ ॥ रघुर्वशेनुविख्यातो राजाद
सरज्ञः पुरा ॥ वक्रवती सविज्ञेयः सप्रदीपाधिवोचवन्
॥ २ ॥ कृत्तिका नेशनिज्ञात्वा देवज्ञेयानि नो हि सः ॥ रोह
णी नोदपि नानु, शनिर्यास्यति सांप्रतं ॥ ३ ॥ शाकटं नोदमि

सुक्तं सरासरं यं करं ॥ द्वादशा वृत्तं त्रिंशः अविद्यति सदा क
र्णं ॥ ५ ॥ पुनश्च वा न तो वा क्यं मंत्रिभिः सह या शिवः देशाश्च न
गरा गमा ज्ञेयानां समं नतः ॥ ६ ॥ ब्रुवन्ति सर्वलोकाश्च ज्ञायमेत
त्समागतः आकुलं जने गृह्ये यौरज्ञानपदादिकं ॥ ७ ॥ पप्रच्छ
प्रणतो राजा वसिष्ठं प्रसुरवान् द्विजान् ॥ समाश्नानं किमनुमि
श्रुतमां द्विजसत्तम ॥ ८ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ प्रजानां प्रनिरुद्धं

नमिन्निन्नेकुतः प्रजाः ॥ इदं योगमस्माच्चतुर्ब्रह्मशक्तादिभि
सह ॥ ९ ॥ न दासश्चीत्यमनसा साहसं परमं महत् ॥ समदा
यच्चतुर्दृवां दिव्यायुधसमचिन्तं ॥ १० ॥ रथमारुह्य वेगेन ग
तो नक्षत्रमण्डलं ॥ स पादयोजनं लक्षसूच्यं स्थोपरि संस्थितां
रोमांतीं पृथुमास्थाय राजा दशरथस्तदा ॥ ११ ॥ रथे नुका
श्वेदिद्यो मयिकाश्च ननु यिते ॥ १२ ॥ हस्तवर्मादये जुयुक्

माहाकेतुसमुच्चिते ॥ दिव्यमाने मातार नैः किं सिद्धमुकु
टे ग्रहे ॥ १२ ॥ वज्राजस नदाकाशे द्वितीयदवभास्वर आ
कस्मपरि न वापं स तारा हनियोजीतं ॥ १३ ॥ कृत्ति कां ने
शनि स्त्रीत्वा प्राविश किल रोहिणी दक्षदसर च त्रैग्रज
धूसर कुनिमुख ॥ सह रासुं शनि दक्ष सुरासुर विम
दन ॥ हसित्वा तं द्रुयात्सौरि रिदं वचनमब्रवीत् ॥ १४ ॥

शनि हवाच ॥ ॥ यौहवन्न वराजं नृप परं रिपूत्रयं करं
देवा सुर मर्त्या न च सिद्ध विद्या चरो रगाः ॥ १५ ॥ म
यावत्सो किताराज न स्रग्वा मुवज्रतिने ॥ तुल्ये हं न वरा
र्थं नृ नयसा यौह वै एव ॥ १६ ॥ वरं ब्रुहि तदा स्मामि
मन्न साय दसितं ॥ दसर ब्रुवाच ॥ ॥ रोहिणी ज्ञे
दयितानु नगं दक्ष दरासर ब्रुवा ज्ञे तस्यो ममृ कुनि

मुद्रांशमिदृशसुतयन्त्रयाशने ॥११॥ स्फुरि
तः सायावद्यावच्चट्टाकमेदिनी ॥ याचितं तु मया
सौरे नान्यमिहामितेव ॥१८॥ एवमस्तु शनिः प्राह
वरं नानुशाश्रितं ॥ सम्राट्पतद्वरं वाजाकृतकृत्योः भवत्तदा
॥१९॥ द्वादशादनुदुर्भिक्षं प्रविशति कदाचन ॥ कृत्तिरेषाम
दियानुत्तैर्लोक प्रविशति ॥२०॥ एवं वरं तु शम्भाय दूष्टो

मावर्षयिव ॥ रथोपरि चतुः स्त्राय भुक्ता वै वक्रतांति ॥
॥२१॥ आत्मासरसृति नैवीं गन एव विनायकं ॥ गजाद
शरचक्षेत्रं सौरे रिदम्बकरोतु ॥२२॥ तुं नमः कृष्णाय निजा
यसि दिक्कं च निजा यवनमो नीलमयूखाय, निलोत्पल
नि ॥ नमो नमो नमो सदैवाय दीर्घसम्पन्नहारय ॥
॥ सालने त्रायः सुकोलनयानन ॥२४॥ नमः पुरु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

1.633

वै नमस्तु ॥ २८ ॥ सर्वतत्त्वं नम नम ॥ नमः कालाग्नि रूडा य कृता
ज्ञाय च वै नम नम . नमो मन्द कृते तु भ्रां श नै श्व वा य वै नम ॥
तय साद ग व दे हा य नित्तं योग र ता य व ॥ ३० ॥ ज्ञान च कुर्व
म स्ते स्तु का स्म या त्म ज्ञ सू न वै ॥ तु वो ददा सि श्वा श्च रु योः
वै ॥ ३१ ॥ दे वा सु र म नु ष्या श्च य शु र प क्षि त्त यो जि
स्त ॥ या व लो कि ता स र्व ना श या वि स मूल त ॥ ३२ ॥

दे वा ॥ तु यांश्च य सु य क्षि त्त यो जि दं ॥ त्र या व लो कि तां सर्व
नर ॥ य ल न ॥ ३३ ॥ उ ह्य श कु म नु ष्यांश्च त्रा व य स प्र ता
र का ॥ ए ज्य श्च य न तु हं भ व दृ ष्या व रो कि ता ॥ ३४ ॥ दे शा
श्च न गर गा मा दी या श्चै व दु मा स्त य ॥ त्र या व रो की तां सै पि न
त्वा या ति ह म न्न तः ॥ ३५ ॥ प्र श दं कु र मे सौ रे ॥ व रा र्थे हं न्व
स्थि त ॥ ए व स्तु त्वा त या स्वरि गुं ह रा जो म हा व ल ॥ ३६ ॥ श्रु व

वीदीदृशं वाक्यं हृष्टो माव भास्करि ॥ ॥ शनिह वाव ॥ तुष्टे
ह न्न वरा जे नु, लवे ना ने न सु पु न ॥ ३६ ॥ वरं बूहिषदाष्टाः
निहृष्टे य्यारयु न पु न ॥ ॥ दशरच ड वा व ॥ न द्यप
प नृ नि ते सौ रे, पि डा कार्था न क स्य वि न ॥ दे वा सुर म नु
ष्या णां ॥ य सु पं क्षि सृ णाः ॥ ३७ ॥ शनिह वाव ॥ ॥ ३८
ज्ञा र्थ ॥ ल ज्ञा यो ग हाः पि डा कराः स्मृ ता न यो यं वरं नु

मं नु ॥ ॥ ह नु द दामि ते ॥ ३९ ॥ न यो प्रो क्त नु म न्नो व्रं ये
पठि त्वा न्ते मा न वाः ॥ एक का लं दि त्वा पि डां मु श्रामि न स्य
वै ॥ ३९ ॥ दे वा सुर म नु ष्या णां सि धि वि द्या च रो र गाः
मृ यु स्था ने हि ता वा पि न्ना यि डा कराः सु ये ॥ ॥ ३० ॥ यः पु
नः शु द या यु क्तः शु वि स्था ने स मा ही तं ॥ स मि प त्रैः स म स्य च
प्र ति मा लो ह तां म म ॥ ३४ ॥ स द्वि ते तु वि शि षे ण स्तो

त्रेणा ते न यजयेत्, यजयि त्वा मम सोत्रं, नु त्वा वै व कु
 ता त्रहि ॥ ५२ ॥ तस्य पि जं न वै वा हं, कलिष्वा मि क दा व
 न ॥ गोचरे जम ल जे वा, द सा खं त द्वा सु व ॥ ५३ ॥ न
 जा मित्तं न तस्य, पि डा वा च ग्रह स्य ग्रह स्य व ॥ अ ने न व पु का रे
 ण, पि डा मु क्तं न गृ ड् वे तु ॥ ५४ ॥ वर द्वा य नु स ग्रा य् रा जा द स र च
 स या ॥ म ने कृ ता र्घ मा त्मा नं, त म स्मो वा च ने श्व र्त्वा ॥ ५५ ॥

१ स्वस्थानं सत नो गन्वा, या प्र का मो भवन्त दार १

शानि ना वा भ नु ता तः स्वस्थानं वा ग म न्ता दा ॥ ५६ ॥
 इति क न्द पू रा णे श ने श्व र स्त वः समा प्त ॥ ॥ अ म म
 र्गा स म्भ ता मं तु ना कृ कृ म य द स हि ना न न्द ग कि ग्गु रीः
 मा ग्गु र्दि न्वा य च तु र्क अ कू ल ग नं प श्व कं वा न्ना ख ल्का
 व ह्वा न ॥ पं व का न्ना पू न न पि व तु रं कृ त्व नं म धु र्त्वा
 न स म्भ क्त्वा न न श्चि न म न गु र्त्वा ल ह्वा न व र्त्वा ॥ ५७ ॥



